अभी जीवित रहें,

सदा जीवित रहें!

बाईबिल का एक महत्वपूर्ण सन्देश,

जिसे हम सब को पढ़ना चाहिये

अभी जीवित रहें,
सदा जीवित रहें!

(बाईबिल का एक महत्वपूर्ण सन्देश,
जिसे हम सब को पढ़ना चाहिये)

लेखक

राबर्ट जे. ल्लोय्ड

क्रिष्टेडेलफियन द्वारा प्रकाशित

अभी जीवित रहें & सदा जीवित रहें!

Live Now - Live Forever!

हम आप तक बाईबिल का एक महत्वपूर्ण सन्देश लाने में आनन्दित है, जिसे हम सोचते है, तथा जानते है, कि यह आपके जीवन को बदल सकता है।

क्या आप जन्म के बाद जीवन में विश्वास करते है? क्या आप मृत्यु के बाद जीवन में विश्वास करते है? क्या आप वर्तमान में जीना चाहते है? क्या आप सदा सर्वदा के लिये जीना चाहते है?

कुछ लोग वास्तव में जन्म के बाद जीवित नहीं रहते है। वे सांस लेते है और सांस छोडते है, और यही जीवन का चिन्ह होता है। लेकिन जीवन सांस लेने और सांस छोडने से कही बढकर है। वास्तव में अभी जीवित रहने का अर्थ है खुश रहना, जीवन का पूर्ण आनन्द लेना। हाल ही में हमने एक महिला से बातें की, जो बहुत दुखी थी, उसने मुझ से कहा, "जब मैं सुबह उठती हूँ, और मुझे पता चलता है कि मैं जीवित हूँ तो मुझे घिन्न आती है। मैं मरना चाहती हूँ।" उसे जीवन से नफरत है। वास्तव में वह दो बार पहले भी मरने का प्रयास कर चुकी थी। वह जीवित नहीं थी। वह केवल विद्यमान थी; और यह नौजवान महिला केवल तीस वर्ष की थी - बडे दुख की बात है। लेकिन बाईबिल के अनुसार वह जीवित नही थी। हमें विश्वास है कि बाईबिल आपको बताती है कि आप अभी वर्तमान में कैसे जीवित रहे, और यह भी बताती है कि आप सदा सर्वदा के लिये कैसे जीवित रहे। वह व्यक्ति जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखता है, और यीशु मसीह जिसके बडे भाई है, वह व्यक्ति वास्तव में सुखी है। वे वास्तव में दुखों और दोषों से मुक्त है। उनका भविष्य ऐसा सुनहरा है कि आप कल्पना नहीं कर सकते, क्योंकि वे न केवल अभी जीवित है बल्कि उनके पास सदा के जीवन की आशा है। उनके पास "एक प्रतिज्ञा" है, जैसा कि बाईबिल बताती है, "क्योंकि वर्तमान जीवन और आने वाले जीवन की प्रतिज्ञा इसी के लिए है।" (1 तिमुथियुस 4:8)

यह एक सच्ची प्रतिज्ञा है। बाईबिल हमें बताती है कि अभी जीवित कैसे रहे, और यदि हम वास्तव में अभी वर्तमान में जीवित रहते है तो हम सदा के लिए भी जीवित रहेगें। यह वास्तव में शुभ समाचार है, और यही "सुसमाचार" का अर्थ है। "सुसमाचार" का शाब्दिक अर्थ "शुभ समाचार" है, और बाईबिल में आपके लिए शुभ समाचार है।

शुभ समाचार यह है कि जो प्रतिज्ञायें परमेश्वर ने अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ की थी, उनके पूरा होने के द्वारा आप यीशु मसीह के साथ और सभी प्राचीन विश्वासियों के साथ सदैव जीवित रह सकते है।

भ्रष्ट संसार

A sick world

आज संसार के सामने समस्या यह है कि अधिकांश लोग वास्तव में अभी जीवित नहीं है। वे केवल विद्यमान है। उनका जीवन सही नही है। अपराध, व्यभिचार, झूठ, चोरी - ये सब इतने आम हो गये है कि इनसे हमारा समाज ऊपर से नीचे तक भ्रष्ट हो चुका है। विश्व के प्रत्येक देश में यह सब बातें सत्य है।

आज हम इस विषय में बातें कर रहे थे - एक व्यक्ति के घर चोरी हो गयी, दूसरे व्यक्ति की कार चोरी हो गयी और हमारे शहर में कई स्थान ऐसे है, जहॉ से आप अधेरे में नही गुजर सकते। दुनिया के हर बडे शहर में ऐसा हो रहा है, क्योंकि लोग ठीक प्रकार का जीवन नहीं जी रहे है - बाईबिल में लिखा है कि "जिसको जो ठीक सूझ पडता था वही वह करता था।" (न्यायियों 21:25)। अब आप ऐसा नहीं कर सकते! जो आपको ठीक लगता है, आप वह नहीं कर सकते। आपको वही करना चाहिये जो परमेश्वर को ठीक लगता है। यदि आप वैसा करेगें, तो आप अभी जीवित रहेगें और आप सदा जीवित रहेगें।

"क्योंकि इस समय के और आने वाले जीवन की भी प्रतिज्ञा इसी के लिए है।" (1 तिमुथियुस 4:8)। प्रेरित पौलुस इस विषय में कहता है, "और भक्ति के लिए अपना साधन कर"; और वह बताता है कि क्यों ऐसा करें। वह कहता है, " क्योंकि देह की साधना से कम लाभ होता है, पर भक्ति सब बातों के लिए लाभदायक है, क्योंकि इस समय के और आने वाले जीवन की भी प्रतिज्ञा इसी के लिए है।" (1 तिमुथियुस 4:8) यही अब का जीवन और सदा का जीवन है।

शारीरिक अभ्यास या ईश्वरीय अभ्यास

Physical exercise or Godly exercise

आप अभी और सदा काल के लिए कैसे जीवित रह सकते है? आप अपना अभ्यास करते है। पर किस प्रकार का अभ्यास? क्योंकि मैं बहुत सी जगह यात्रा करता और घूमता हूँ तो मैने देखा है कि सुबह के समय लोग दौडते रहते है। पूरे विश्व में सुबह के समय दौडना लोकप्रिय है और लोग इसके दीवाने है। आप चाहे कही भी जाये, सुबह के समय दौडने वाले लोग आपको दौडते हुए मिलते है। क्या आपने कभी इन दौडने वालों के चेहरे को ध्यान से देखा है? मैं इन दौडने वालों के चेहरे का अध्ययन कर रहा हूँ, और उनमें से अधिकतर खुश नहीं दिखते है। मैं दौड लगाने वालो की आलोचना नहीं कर रहा हूँ। पौलुस यह नहीं कहता कि शारीरिक व्यायाम अच्छा नहीं है, वह कहता है कि उससे ईश्वरीय अभ्यास की तुलना में थोडा ही लाभ होता है।

वास्तव में महत्वपूर्ण क्या है? पौलुस हमें सिखाना चाहता है कि हम कैसे जिये। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि एक स्वस्थ्य शरीर होना अच्छी बात है, लेकिन एक व्यक्ति से जिसे मैं जानता था, मैनें पूछा कि वह अभ्यास के लिए क्या करता है उसने कहा कि वह अपने मित्रों के लिए जो दौडते है, "शवपेटी उठाने" का कार्य करता है! अत: कुछ कार्यो की अति होना सम्भव है, क्या नही है। शारीरिक अभ्यास - स्वस्थ्य शरीर होना महत्वपूर्ण हो सकता है, लेकिन ईश्वरीय अभ्यास उससे कही अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि उसके द्वारा आप न केवल अभी जीवित रहते है - आप हमेशा के लिए जीवित रह सकते है। इस शरीर के लिए किया जाने वाला सबसे अच्छा शारीरिक अभ्यास, इस शरीर को कुछ और वर्षो के लिए जीवित रख सकता है, लेकिन यदि आप ईश्वरीय अभ्यास करते है तो आप अनन्त जीवन पा सकते है। सुबह दौडना अच्छा हो सकता है, लेकिन मैनें 105 वर्ष का दौडने वाला नहीं देखा, क्या आपने देखा है?

हमारे उद्देश्य

Our goals

इस लघु पुस्तिका के द्वारा हमें दो उददेश्य को पूरा करना है।

1. पहला उद्देश्य बाईबिल से यह बताना है कि हम वास्तव में वर्तमान में कैसे जीवित रह सकते है, हम चिन्ता, कुंठा से मुक्त जीवन और एक ऐसा जीवन जो "परमेश्वर की

शांति, जो सारी समझ से परे हैं" से परिपूर्ण है, कैसे प्राप्त कर सकते है। वह वर्तमान जीवन का एक हिस्सा है।

2. हमारा दूसरा उददेश्य बाईबिल से यह बताना है कि परमेश्वर ने वादा किया है, कि जो लोग खुशी से परमेश्वर के मार्ग पर चलते हुए वर्तमान जीवन जी रहे है, वे परमेश्वर के राज्य में, जिसे यीशु मसीह अपने पुन: आगमन पर इस पृथ्वी पर स्थापित करेगें, अनन्त जीवन के अधिकारी होगें, और उस राज्य में यीशु मसीह एक राजा के रुप में राज्य करेगें।

परमेश्वर को प्राथमिकता

God must be first

अभी जीवित रहने और सदा जीवित रहने के लिए हमें परमेश्वर को अपने जीवन में प्राथमिकता देनी चाहिये। जब तक हम अपने आप को प्राथमिकता देगें तब तक हम दुखी रहेगें, और संसार इसे हम पर प्रतिदिन साबित कर रहा है।

आईये हम मरकुस अध्याय 10 को देखें और हम एक धावक (दौडने वाला) को पायेगें जिसके बारे में हम चर्चा कर रहे है। वह अवश्य ही अच्छी स्थिति में होना चाहिये। मैं आपको बताऊगां कि मैं कैसे जानता हूँ कि वह अच्छी स्थिति में होगा। जब आप किसी धावक को देखते है तो अक्सर देखते है कि उसकी सांस फूली होती है। और यह व्यक्ति दौडता हुआ यीशु मसीह के पास आया और और उसकी सांस फूली होनी चाहिये थी, लेकिन ऐसा नहीं था। आप जितने अच्छे धावक होगें आपकी सांस उतनी ही कम फूलेगी। पद 17 कहता है कि वह दौडता हुआ यीशु मसीह के पास आया और अपने घुटनों पर बैठ गया। और यदि आप भी मेरी तरह करते है तो, जब मैं दौडता हूँ तो मुझे सीधे खडे रहना पडता है ताकि मैं अधिक से अधिक हवा सांस द्वारा ले सकूं, और यदि आप घूटनों पर बैठ जाते है तो आप उतनी हवा सांस द्वारा नहीं ले सकते है। इसलिए मैं हांफता रहूंगा लेकिन वह बोल सकता था।

वह यीशु मसीह के पास दौडता हुआ आता है और घुटने टेकता और कहता है, "उत्तम गुरु अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिए मैं क्या करुं?" यह एक बहुत ही आश्चर्यजनक प्रश्न है।

उत्तर देने से पहले यीशु मसीह उससे कुछ प्रश्न पूछना प्रारम्भ करते है। वे कहते है," तू आज्ञाओं को तो जानता है?" और वह बताते है, " हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, धोखा न देना, अपने पिता और अपनी माता का आदर करना।" और पद 20 में व्यक्ति यीशु मसीह को उत्तर देता है," हे गुरु इन सब को मैं बचपन से मानता आया हूँ।"

यहां एक विशेष नवयुवक है! वह स्वस्थ्य है और उसका शरीर शुद्ध है, और यह उससे कही अधिक है जो हम आज के लोगों के विषय में कह सकते है।मुझे पता है कि आप आज ऐसे लोगों को अवश्य ही जानते होगें जो नशीली दवाओं और शराब के द्वारा अपने शरीर को नष्ट कर रहे है। यह बडे ही दुख की बात है। लोग अपने एकमात्र शरीर को, जो शायद ही उनको मिल पायेगा, नष्ट करने का निश्चय कर चुके है। हमारे पास केवल एक ही शरीर है और हममें से कुछ उसको नष्ट कर रहे है।

एक अच्छा नवयुवक, लेकिन...

A fine young man, but...

यह एक स्वस्थ्य व्यक्ति था और वह एक अच्छा कार्य करने का प्रयास कर रहा था और इसके अतिरिक्त वह धनी भी था। आप जानते है, युवा महिलाये सोचेगीं, कि वह एक बहुत ही अच्छा पति साबित होगा। वह स्वस्थ्य था, उसका शरीर शुद्ध था, और वह धनी था। और इसीलिए पद 21 कहता है कि यीशु मसीह ने उसको देखा और उसको दुलारा। इसलिए हम जानते है कि वह व्यक्ति झूठ नहीं बोल रहा था। बहुत से लोग आपको मिल सकते है जो कहते है कि," इन सब बातों को मैं बचपन से मानता आया हूँ," लेकिन वे झूठ बोलते है। वह झूठ नहीं बोल रहा था- यह सच है। इसलिए यीशु ने उससे प्रेम किया और कहा,"तुझ में एक बात की घटी है, जा जो कुछ तेरा है, उसे बेच कर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा और आकर मेरे पीछे हो ले।"

ठीक है- लेकिन वह इस बात की आशा नहीं कर रहा था। जो वह करना चाहता था यह उससे कही अधिक था। वास्तव में उसकी इच्छा ईश्वर को प्रथम स्थान देने की नहीं थी। उसके जीवन में बहुत सी ऐसी चीजें थी जो उसके लिये अनन्त जीवन से अधिक मूल्यवान थी। और यह बात बहुत से लोगों के विषय में सच है। क्या आपके जीवन में भी कुछ ऐसी चीज है जो आपके लिए अनन्त जीवन पाने से अधिक महत्वपूर्ण है? अगर ऐसा है तो चाहे वह जो भी चीज हो वही आपके लिए परमेश्वर है।

बाईबिल हमसें मूर्ति पूजा न करने के लिए कहती है। यदि आपके जीवन में कोई ऐसी चीज है जिससे आप परमेश्वर से अधिक प्रेम करते है, तो वह आपके लिए परमेश्वर है। यह चीज आपका धन हो सकता है, यह आपकी समपत्ति हो सकती है, यह आपकी नौकरी हो सकती है, यह आपका परिवार हो सकता है, जो भी आप कहें वह हो सकता है - "यह,परमेश्वर, आप से भी ज्यादा महत्वपूर्ण है।" परमेश्वर किसी के भी जीवन में दूसरा स्थान नहीं लेगा। और यही समस्या है कि लोग परमेश्वर को अपनी शर्तो पर चाहते है।

"हे परमेश्वर, मैं तेरी अराधना करना चाहता हूँ - रविवार को - लेकिन शेष पूरा सप्ताह मेरा है; और परमेश्वर कहता है; "नहीं, यह सही तरीका नहीं है।"

और इसलिए यह नौजवान खुश नहीं था। हम कैसे जानते है कि वह खुश नहीं था? क्योंकि पद 22 में बाईबिल हमें बताती है कि वह खुश नहीं था। वह स्वस्थ्य था, वह धनी था, उसने अपने शरीर की देखभाल की थी - लेकिन वह दुखी था और बहुत उदास हो गया था।

और वह हर एक मनुष्य जो परमेश्वर को अपने जीवन में प्राथमिकता नहीं देता है वह दुखी है। वे समझ नहीं पाते कि समस्याऐं क्यों है। लोग गलत चीजों को अपने जीवन में प्राथमिकता देते है और जिससे खुशी नहीं मिलती।

सच्ची खुशी

True Happiness

मेरे देश (अमेरिका) में सविंधान और अधिकारों का विधेयक है, जिसे अमेरिकी लोग बहुत ही अच्छी चीज समझते है वे सोचते है कि यह सविंधान और अधिकारों का विधेयक प्रत्येक अमेरिकी को खुशी प्रदान करने की गारण्टी का अधिकार देता है। क्या वे इसे ऐसे प्राप्त कर सकते है - वे एक मुक्त मार्ग पर है वे चाहे ईधर जाये चाहे उधर जाये और वे हमेशा इसके लिए दौडते रहते है। परमेश्वर खुशी प्राप्त करने का अधिकार नहीं देता है, परमेश्वर स्वंय खुशी की गारण्टी देता है। और यह इसका पीछा करने से अच्छा है, और ऐसा बहुत से लोग अपने जीवन में करते है - वे यहां वंहा खुशी का पीछा करते रहते है। बाईबिल आपको बताती है कि खुशी कैसे प्राप्त करें - ठीक इसी समय! और इसके बाद सदा सर्वदा के लिए। क्या यह एक आश्चर्यजनक समाचार नही है? और यह आपके लिए बाईबिल का समाचार है।

पर इसके लिए विश्वास की आवश्यकता होती है- और बेचारे इस व्यक्ति के पास पर्याप्त विश्वास नहीं था - क्या आपके पास है? यदि आपको विश्वास नहीं है, तो इस समय इसकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि आप इसे प्राप्त कर सकते है - और यही मुख्य बात है। यंहा तक कि प्रेरितों के पास भी यह विश्वास नहीं था। उन्होंने कहा, "हमारा विश्वास बढा।" (लूका 17:5) और जब आप परमेश्वर से विश्वास बढाने के लिए प्रार्थना करते है तो वह आपको विश्वास देगा, बशर्ते आप सच्चे मन से मागें, और परमेश्वर जानता है कि आप सच्चे मन से मांग रहे है या नहीं। यदि आप कहते है कि, "परमेश्वर, मैं वास्तव में तूझ को अपने जीवन में प्राथमिकता देना चाहता हूं, और मैं वास्तव में चाहता हूं कि तू मेरे विश्वास को बढाये," वह अवश्य ऐसा करेगा। लेकिन अगर आप सच्चे मन से नही कहते तो इसे ना मागें।

यह आपका जीवन है

This is your Life

हम सब ग्राफ, चार्ट और सब ऐसी चीजों से परिचित है। जब हम किसी नक्शे को देखते है तो उसके नीचे की तरफ कोने पर एक पैमाना बना होता है जो बहुत सी मील की दूरी को इंच में प्रदर्शित करता है। तो अब मैं आपको एक ऐसा ही पैमाना दिखाने जा रहा हूँ। यह पैमाना आपके जीवन का है।

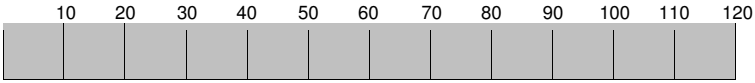

मानव जीवन के वर्ष

इसका प्रत्येक भाग दस वर्षो को प्रदर्शित करता है। सौ वर्षो के लिए इसकी क्या रीडिंग होगी? हममे से बहुत से सौ वर्षो के नहीं है - हो सकता है हममे से कोई भी नहीं। अत: अधिकांश लोगों के लिए - यह हमारा जीवन है।

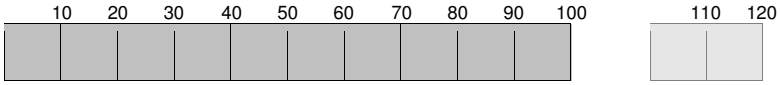

हमारा जीवन

यह, जितनी आयु हमारी होगी उससे कही अधिक लम्बे जीवन को प्रदर्शित करता है। औसत आयु सत्तर वर्षो से थोडी अधिक है। कुछ रीडिंग अधिक आयु वाली हो सकती है - लेकिन लगभग हम सभी के लिए यह एक सौ वर्षो का पैमाना पर्याप्त से कहीं अधिक है।

यह आपका जीवन है। इससे कोई फर्क नहीं पडता, चाहे आप जवान हो, या मध्यम आयु के हो या बूढे हो, क्या आप कभी बीमार हुये है? क्या आप कभी थके है? क्या आप कभी हतोत्साहित हुए है? क्या आप कभी दुखी हुये है? क्या आपको कभी कोई समस्या हुयी है? ये बातें सामान्य है। ये सभी के साथ होती है। जिन लोगों के साथ समस्यायें नहीं होती है वे मृत होते है। इसलिए धन्यवादित होओं कि आपके साथ कुछ समस्यायें होती है - कम से कम इनसे आपको पता चलता है कि आप जीवित है।

लेकिन आप जानते है कि जब आप दुखी होते है तो यह आपका अच्छा समय नहीं होता है। अमेरिका में डिजनीलेंड है। लेकिन अगर आपका पैर का अगूंठे में चोट लगी है और यह सूजा हुआ है तो आप डिजनीलेंड का आनन्द नहीं ले सकते है। यंहा तक कि यदि आप किसी आनन्द लेने कि जगह पर भी हो, और आपको कोई दर्द है तो आप उसका अनन्द नहीं ले सकते। और यह जीवन दुख, समस्याओं और परीक्षाओं से भरा हुआ है- और यही आपका जीवन है।

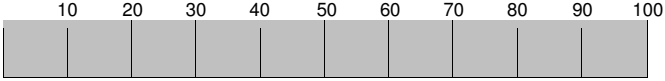

दर्द, चिन्ता, डर, परेशानियाँ, परीझायें ...

और परमेश्वर और यीशु मसीह आपको एक बेहतर जीवन दे रहे है - एक लम्बा जीवन, - एक अलग जीवन। यह वर्तमान जीवन समाप्त होने जा रहा है। लेकिन जो जीवन परमेश्वर आपको देता है वह सदा सर्वदा के लिए है। यह एक अलग जीवन है, कोई दर्द नहीं, कोई दुख नही, कोई समस्यायें नहीं, कोई भूख नहीं, कोई परेशानी नही, कभी हतोत्साहित नही और यह सदा सर्वदा का जीवन है। हम अनन्त जीवन को समझ नहीं सकते, जो सदा सर्वदा के लिए - हम इसे समझ नहीं सकते है।

परमेश्वर आपसे और मुझसे कह रहा कि "यदि तुम इस जीवन में मुझे पहला स्थान दोगे तो तुम्हें अन्नत काल का जीवन मिलेगां।" यही परमेश्वर आपको प्रदान कर रहा है। मैं (लेखक या अनुवादक) यह आपको प्रदान नहीं कर रहा हूँ। मेरे पास यह देने के लिए नहीं है। परमेश्वर इसे प्रदान कर रहा है। यह परमेश्वर का उपहार है, यदि हम परमेश्वर

को प्रथम स्थान दें।

अब हम मरकुस अध्याय 10 पर पुनः लौटते है और पतरस यह प्रश्न पूछता है जो आपके भी मन में हो सकता है। वह प्रभाव शाली रुप से कहता है। "हमने परमेश्वर को प्रथम स्थान दिया है पर यीशु से हमें क्या मिलेगा? हम तो सब कुछ छोडकर तेरे पीछे हो लिए। (पद 28)

इस प्रश्न का उत्तर इस पुस्तक का शीर्षक है। यीशु पद 29 में कहते है, “मैं तुम से सच कहता हूँ..." यह यीशु बात कर रहा है, जब यीशु बात कर रहा हो तब हम ध्यान दे सकते हैं... "ऐसा कोई नहीं, जिसने मेरे औरे सुसमाचार के लिए घर या भाईयों या बहिनों या माता या पिता या लड़के वालों या खेतो को छोड़ दिया हों।" (पद 30)

"पर वह पायेगा उससे दो गुना? उससे दस गुना? नहीं, वह कहता है सौ गुना । एक सौ गुना का अर्थ है सौ गुना जितना, उसका एक सौ गुना जो इस वर्तमान जीवन में है। हम इस जीवन के बारे में बात कर रहे है - अभी इस वक्त ही आपको घरों, भाईयों बहनों माताओं, बच्चों और भूमि का सौ गुना मिल जायेगा। आप को कुछ सताव अवश्य होगा "क्योंकि जो कोई भी जीवित है उसे होता है और फिर इसके अलावा,” आने वाले राज्य में अन्नत जीवन।

क्या ये अद्वभुत नही है! यह सोचना कि परमेश्वर अपने बेटे मसीह के द्वारा आपसे यह कह रहा है कि यदि आप इसी समय उसको अपने जीवन में प्रथम स्थान देंगे तो वह आपको इसी वक्त सौ गुना आशीष देगा और इसके अलावा वह राज्य भी देगा। क्या आपको विश्वास होगा कि वे कुछ लोग जिनका थोड़ा ही जीवन बाकी है, ईश्वर को नीचा करके कहते है," नहीं - मैं जो कुछ करना चाहता हूँ और जब करना चाहता हूँ करुँगा, और में अनन्त जीवन के बजायें मरना चाहता हूँ।"

जीवन का परित्याग

Throwing life away

क्या यह सोचना आश्चर्यजनक नहीं है कि लोग अपने आप को पहला स्थान देकर ईश्वर को नीचा गिरा रहे है और जीवन को त्याग रहे है। क्या आप यह विश्वास कर सकते है? यह हर दिन हो रहा है। यह अभी हो रहा है। बहुत से लोग है जो परमेश्वर के

वचन (बाईबिल) को पढ़ना नही चाहते, जबकि उनके पास परमेश्वर का वचन (बाईबिल) आसानी से मौजुद रहता है। वे अन्य काम करने में, जो इतने महत्वपूर्ण नहीं होते, व्यस्त रहते है। वे ताश खेलते हैं, टेलीविजन देखते हैं, वे फिल्में देखने या फिर बड़े खेल आयोजन को देखने जाते है। मेरा यह अर्थ नहीं है कि ये सब करना कोई पाप है, लेकिन क्या ये सब चीजें परमेश्वर को अपने जीवन में प्रथम स्थान देने से अधिक महत्वपूर्ण है? आप ये सब कर के उद्धार नहीं पा सकते। ये सब काम, महत्वपूर्ण कामों से दूर ले जाते, पर यदि आप उन्हें सही समय पर करेगें तो ये सब सही हो सकते है, पर यदि आप ये सब काम करते है तो आप सतर्क रहे, क्योंकि इस संसार के साथ एक समस्या है कि- वे केवल वही काम करते है जो वे करना चाहते है और जब करना चाहते है, और उनके पास परमेश्वर के लिए समय नहीं है।

मुझे खुशी है कि आपने इस पुस्तक को पढने का समय निकाला, क्योंकि हमारा विश्वास है कि इसका सन्देश आपके भविष्य के लिए अतिमहत्वपूर्ण है जो अभी शुरू होने जा रहा है।

आपका भविष्य क्या है? क्या परमेश्वर आपके साथ है? यदि आपने ईश्वर से "हाँ" नहीं कहा तो फिर आप ने "नही" कहा है। ईश्वर की शब्दावली में "हो सकता है" जैसा कोई शब्द नहीं है। आप "हो सकता है, परमेश्वर मैं ऐसा करुँगा" नहीं कह सकते, परमेश्वर " हो सकता है" नहीं बल्कि केवल "हाँ" या "नही" सुनता है।

यीशु ने कहा "जो मेरे साथ नहीं वर मेरे विरोध में है।" (मत्ती 12:30) इस बात से कई लोगों को सदमा लग सकता है - वे वास्तव में यीशु मसीह के विरुद्ध नहीं होना चाहते है। पर यदि आप पूर्ण रुप से उसके लिए नहीं तो आप उसके विरुद्ध है, क्योंकि बीच में कुछ भी नहीं। यदि आप अपने जीवन को ईश्वर की ओर मोड़ेंगे, तो आपके लिए अभी सर्वोत्तम जीवन है! और आपको उसके राज्य में अनन्त जीवन मिलेगा।

क्या अदभुत प्रस्ताव वह आपको दे रहा है।

भयंकर जीवन और मृत्यु	के बदले	अभी शान्ति और अनन्त जीवन

परमेश्वर से सब कुछ सम्भव है

With God everything is possible

नीतिवचन अध्याय 3, पद 5 कहता है - “सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना" जिसका अर्थ है - परमेश्वर पर भरोसा रखना। अपने धन पर भरोसा न रखना, अपनी योग्यता पर भरोसा न रखना, अपनी समझ पर भी भरोसा न रखना। "तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह (वह क्या करेगा - वह तुम्हारी देखभाल करेगा) तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगां।"

यह बाते सुलेमान कर रहा है - सबसे बुद्धिमान व्यक्ति। राजा सुलेमान ईश्वर की प्रेरणां से कहता है, "तू अपनी समझ का सहारा न लेना वरन् सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना।" अपनी समझ अपनी बुद्धि का सहारा न ले। आप स्वंय पर भरोसा करके उद्धार प्राप्त नहीं कर सकते। उद्धार ईश्वर के बिना असंभव है। यही मरकुस 10:27 कहता है, “क्योंकि परमेश्वर से सबकुछ हो सकता है।" पर आप और मैं अकेले नहीं कर सकते।" परमेश्वर और यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र, के बिना आप किसी भी तरह सदा काल के लिए जीवित नहीं रह सकते। किसी भी तरह नहीं।

परमेश्वर के नियंत्रण में रहना

God in control

फिलिप्पिओं अध्याय 4, पद 6 के एक अनुवाद में लिखा है, "किसी भी बात की चिन्ता न करें।" क्या आप जानते है कि आज दुनिया का सबसे बडा हत्यारा चिन्ता है।अधिकांश लोग अस्पताल में चिन्ता के कारण है। चिन्ता से अल्सर, हदयघात और कई प्रकार के कैन्सर भी उत्पन्न हो सकते है। चिन्ता से सब प्रकार की समस्याएं उत्पन्न होती है। अधिकाँश लोग जो बीमार है और मर रहे है, चिन्ता के कारण मर रहे है, वे अत्यन्त चिन्ताग्रस्त स्थिति में है और वे मर रहे है। हम अभी आनंदित रहने और सदाकाल तक जीवित रहने की बात कर रहे है।

अतः पौलुस कहता है कि, "किसी भी बात की चिन्ता मत करो : परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं।" (फिलिप्पियों 4:6) क्या यह सुन्दर नहीं है! चिन्ता न करें, प्रार्थना में

परमेश्वर को अपनी सब आवश्यकताओं के बारे में कहे "तब परमेश्वर की शांति, जो समझ से बिल्कुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।" (फिलिप्पियों 4:7) अभी जीवित रहने का यही तरीका है - अपने जीवन को परमेश्वर की ओर मोडे और उसको अपने जीवन में प्रथम स्थान दें। वह उसे नियंत्रण में ले लेगा वो आपका मार्गदर्शन करेगा, आपको कोई चिन्ता न होगीं क्योंकि आप यह जानते है कि आप उसके नियंत्रण में है और जो कुछ भी आपके साथ होता है, वह आपकी भलाई के लिए होता है, क्योंकि "और हम जानते है कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते है, उन के लिए सब बातें (केवल कुछ बातें नहीं बल्कि सब बातें) मिलकर भलाई को ही उत्पन्न करती है, अर्थात् उन्हीं के लिए जो उस की ईच्छा के अनुसार बुलाऐं हुए है।" (रोमियों 8:28) **क्या यह आप है?** क्या आप उनमें से एक है जो, "उसके उद्देश्य के अनुरुप बुलाये गये है?" यदि आपने परमेश्वर से "हाँ" नहीं कहा, तो आपका उत्तर "नही" है। "नहीं- मुझे यह जीवन चाहिए, मैं सदाकाल के लिए जीवित नहीं रहना चाहता और आनंदित रहना नहीं चाहता, मैं दुखी ही रहना चाहता हूँ" ;क्या यह आपका चुनाव है? कई लोग है जो दुःख तकलीफ पसंद करते है। मुझे आशा है कि वे दुःखी होने पर खुश है, क्योंकि उनकी संख्या अधिक है।

परमेश्वर आपको आनंद और उद्धार अभी दे रहा है। कोई चिन्ता नहीं, किसी भी बात की चिन्ता न करें। पर आपको क्या करना है केवल परमेश्वर को अपने जीवन में प्रथम स्थान देना है- और यही सबसे कठिन कार्य है, है ना? हम ईश्वर को प्रथम स्थान नहीं देना चाहते। हम वही करना चाहते है जो हम करना चाहते है और जब कभी करना चाहते है।

अब हम दूसरे भाग को देखना चाहते है। अब हम जान गये है कि हम वर्तमान में कैसे जीवित रह सकते है। वर्तमान में जीवित रहने का तरीका ईश्वर को प्राथमिकता देना है। वह आपके जीवन को अपने हाथ में ले लेगा और आपका मार्गदर्शन करेगा। आप जो भी करना चाहते है उसे करने में आपकी सहायता करेगा, बशर्ते वो उसकी ईच्छा के अनुरुप हों। किसी बैंक में डाका डालने के लिए आप परमेश्वर से सहायता के लिए नहीं कह सकते। यदि आप कुछ सही करना चाहते, कुछ अच्छा करना चाहते है तो आप ईश्वर से सहायता के लिए प्रार्थना करें- परमेश्वर और यीशु मसीह सदैव आपकी सहायता करेगें। पौलुस कहता है, "जो मुझे सामर्थ देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ।" (फिलिप्पियों 4:13) आप कर सकते हैं, मैं कर सकता हूँ।

वहीं मसीह यीशु जिसने पौलुस की सहायता की वह आज भी वैसे ही जीवित है जैसे पौलुस के समय में था जब पौलुस ने यह बात कही।

पुर्नरूत्थान की आशा

The hope of resurrection

वही यीशु मसीह, आपके लिए मरा; और वह चाहता है कि आप उस पर विश्वास करें ताकि आप सदा के लिए उसके साथ जीवित रह सके। क्योंकि वह मर नहीं गया है वह जीवित है। लेकिन जब वह मरा तो वह जीवित नहीं था। आप जानते है जो यीशु मसीह के साथ हुआ था। वह 33 वर्षो से कुछ ज्यादा जीवित रहे और दुष्ट व्यक्तियों ने उन्हें मार दिया। फिर क्या हुआ? सम्पूर्ण विश्व जानता है जो हुआ - उनको कब्र में रखा गया। तीन दिन बाद वह कब्र से बाहर आ गये। वे जीवित थे। वे मृतकों में से जी उठे। "और जो सो गए थे उनमें से पहिला फल हुआ।" (1 कुरिन्थियों 15:20) जैसा हमें बताया गया है। जिसका अर्थ है कि वह सदा के लिए जीवित रहने के लिए कब्र से बाहर आये। पौलुस कहता है कि जैसा यीशु मसीह के साथ हुआ हमारे साथ भी हो सकता है। आपको मरने के विषय में चिन्तित होने कि आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यदि आप मसीह में मर गये तो आप फिर जीवित होगें। लेकिन बाईबिल मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में शिक्षा देती है न कि उस जीवन के बारे में जब आप मरे हुए है और इन दोनों बातों में बड़ा फर्क है। बड़े दुख की बात है कि कई लोग उस जीवन पर विश्वास करते है, जबकि आप मृत है, पर बाईबिल इस विषय में शिक्षा नहीं देती। पौलुस एक सुन्दर अध्याय में, जो पुर्नरूत्थान का अध्याय कहलाता है, 1 कुरिन्थियों 15:51 में कहता है "हम सब तो नहीं सोएगें।" बाईबिल में प्रत्येक जगह मृत्यु को सो जाना कहकर सम्बोधित किया गया है। क्या होता है जब आप सो जाते है? आप अचेतन हो जाते है और जब तक आप जाग नहीं जाते आपको कुछ भी पता नहीं होता। यही मृत्यु है। यह शान्ति पूर्वक सो जाना है। पौलुस कहता है, "हम सब तो नहीं सोयेगें, परन्तु सब बदल जायेगें। और यह क्षण भर में पलक मारते ही पिछली तुरही फूकंते ही होगा। (पद 51) यीशु मसीह पुन: इस पृथ्वी पर वापस आ रहे है। यदि आप उनके आने से पहले मर जाते है, तो आपको चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है; वे आपको जीवित करेगें। यदि आप जीवित रहते है - तो बड़ा अच्छा होगा - आप उन में से होंगे जो सोयेगें नहीं पर एक ही पल में पलक झपकते ही आप बदल जायेंगे। "क्योंकि अवश्य है कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन लें और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तब यह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाऐगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया है।" (1 कुरिन्थियों 15:53-54)

अमरता भविष्य का उपहार न कि वास्तविक अधिकार

Immortality a future gift – not a natural possession

बाईबिल बताती है कि विश्वासियों को अमरता प्राप्त होगी। उनके पास अभी अमरता नहीं है। यह बाईबिल का संदेश है। वह उस संदेश से भिन्न है जो आपको कई चर्चो में सुनने को मिलेगा। वे आपसे कहेंगे कि एक अमर आत्मा है और मरकर भी आप जीवित रहते है। यह बात बाईबिल में कही नहीं है।

मैं आपके लिए इनसाईक्लोपिडिया ब्रिटैनिका से दुख:द वृतान्त पढ़ना चाहता हूँ। आप स्वंय इसे इस्चेटोलॉजि शीषर्क के अन्तर्गत पढ़ सकते हैं। आप इन शब्द को पढ़ेगें: "पुनरुत्थान के बारे में पारम्परिक सिद्धांत को आत्मा और इसकी अमरता की ग्रीक (यूनानी) अवधारण से जोड़ दिया गया।" क्या ये रोचक नहीं, जब इन्साईक्लोपिडिया ब्रिटैनिका कहती है कि पुर्नउत्थान, की पारम्परिक शिक्षा, बाईबिल कि शिक्षा, को यूनानी अवधारणा के साथ जोड दिया गया, जबकि बाईबिल आत्मा और उसकी अमरता के विषय में नहीं बताती। यदि आप वापस यूनानी (ग्रीक) दर्शनशास्त्र को देखें तो आप पाएंगे कि वह एक अमर आत्मा के विषय में बताता है। प्लेटो ने भी ऐसा कहा । प्लेटो यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करता था, वह यीशु के पहले का था, वह यीशु पर तो विश्वास नहीं करता था वह परमेश्वर पर भी विश्वास नहीं करता था। और न ही उसने इस धर्मसिद्धांत का अविष्कार किया। इतिहास से हमें पता चलता है कि ये सिद्धान्त मिस्रियों से आया और यूनानी लोगों ने मिस्रियों से इसे ग्रहण कर लिया है।

इतिहासविद् हेरोडोटस के अनुसार, मिस्रि पहले ऐसे लोग थे जिन्होनें आत्मा की अमरता पर विश्वास किया। यदि आप मिस्र (Egypt) जायें तो आप उन सुन्दर पिरामिडों को देख सकते हैं और उन स्थानों को देख सकते हैं जहाँ उन्होनें अपने फिरौनो (Pharaohs) को रखा हुआ है। और फिर आप उनके संग्राहलयों में जा सकते हैं और नावों को देख सकते है जो उन्होने बनायी थी और फलों के मरतबानों, जो वे छोड़ के गये; और सब प्रकार की अन्य चीजें जो फिरौनों के लिए बनायी गयी, लेकिन वे मर गये, और जिन्हें वे कभी उपयोग नही कर पाये। मुझे आश्चर्य है कि क्यों? क्योंकि बाईबिल बताती है कि मृत्यु एक गहरी निद्रा के समान है, जिसमें आप न तो कुछ कर सकते है और न कुछ सोच सकते है और न कुछ जान सकते है।(सभोपदेशक 9:10)। और पौलुस 1 कुरिन्थियों 15 में कहता है कि, यदि पुनरुत्थान नहीं तो कोई आशा भी नहीं। यदि आप मृत्यु के बाद भी जीवित रहते है तो आपको पुर्नउत्थान की कोई आवश्यकता ही नहीं है। लेकिन बाईबिल बताती है कि

पुर्नउत्थान के बिना कोई आशा ही नही है। क्या आप बाईबिल के हर एक उस स्थान को देखना चाहेगें जहा अविनाशी (immortal) शब्द मिलता है? आप सोच रहे होंगे यह तो पूरी रात भर का समय ले लेगा? नहीं सारी रात का समय नहीं लगेगा - वह बाईबिल में केवल एक ही जगह मिलता है। यह सच है। शब्द "अविनाशी" (immortal) पूरी बाईबिल में एक बार मिलता है। वह पद कहता है कि केवल परमेश्वर ही अविनाशी है। (1 तिमुथियुस 1:17) अब शब्द "अविनाशिता" (immortality) बाईबिल में पाँच बार मिलता है। हमने उनमे से दो को 1कुरिन्थियों 15:53-54 में देखा है। अन्य जगहों में वह कहता है अविनाशिता वह है जिसको हमें खोजना चाहिए। आप ऐसी चीज की खोज नहीं करते जो आपके पास पहले से मौजूद है, क्या आप करतें हैं?

तो अब यीशु मसीह के विषय में क्या है। "पुनरुत्थान के अध्याय" में - 1 कुरिन्थियों अध्याय 15 के पद 20 में यीशु मसीह को "जो सो गए है, उन में पहिला फल" बताया गया है। अब यदि मेरे पास एक सेव का वृक्ष है, और शरतृ ऋतु आती है और वृक्ष पर सेव लगते है, तो वृक्ष का पहला फल क्या है? सेब! अब दूसरे फल क्या है? संतरे ? नहीं ऐसा नहीं हो सकता! सेब के वृक्ष के फल सेब ही होंगे और वृक्ष का दूसरा फल भी सेब होगा तीसरा फल भी सेब ही होगा। आम, संतरा, नीबूं या अन्य फल कभी नही होगा। यीशु मसीह जो सो गये उनमें पहला फल है।

नरक के विषय में सच्चाई

The truth about hell

जो कुछ यीशु मसीह के साथ हुआ वह हमारे साथ भी होगा, वह मारा गया। वह दफनाया गया। बाईबिल बताती है कि उसकी आत्मा "नरक" में गई। यही बाईबिल कहती है। चौकिये मत। शब्द "नरक" को "कब्र" और "गड्ढे" में भी अनुवादित किया गया है। यही शब्द "शियोल" (पुराने नियम का इब्रानी शब्द) तथा "हेदेस" (नये नियम का यूनानी शब्द) को कही कही अनुवादकों द्वारा "नरक" अनुवाद कर दिया गया है और कही कही "कब्र" और कही "गड़हा" अनुवादित कर दिया गया है। अतः यीशु मसीह का शरीर, उसका अस्तित्व, (या "आत्मा") को एक कब्र में, एक गुफा में रखा गया।

तीन दिन बाद वह (यीशु मसीह) जीवित होकर कब्र से बाहर आये। ऐसा ही यीशु मसीह के साथ हुआ। और बाईबिल बताती है कि आपके साथ भी ऐसा ही होगा, यदि आप यीशु मसीह में है। आप दूसरे फल होंगे। ऐसी आशा न रखें कि आपकी दशा यीशु मसीह से

भिन्न होगी।

यीशु मसीह मरे और दफनाये गये, और जी उठे और उनको अमरता दी गयी। बगीचे में दफनाये जाने के तीन दिन बाद, मरियम ने यीशु मसीह को देखा और कहा, " हे गुरु"; और यीशु मसीह ने कहा - "मुझे मत छू, क्योंकि में अभी तक पिता के पास नहीं गया हूँ।" तीन दिनो तक वह स्वर्ग में नहीं गया। उसने कहा वह नहीं गया। तीन दिनों तक वह कब्र में रहा। इसलिए आप यह आशा न रखे कि मरने के बाद आप स्वर्ग में जायेगें। वह (यीशु मसीह) चालीस दिन बाद स्वर्ग में गये, लेकिन बाईबिल, यह भी बताती है कि केवल यीशु को छोड़कर और कोई वहाँ नहीं गया। यह बड़ी रोचक बात है, क्या नही है? यूहन्ना 3:13 में लिखा है, कि यीशु को छोड़कर कोई स्वर्ग नहीं गया।

कौन सी कलिसिया सही है?

Which church is right?

अब हो सकता है कि ये बात आपको थोड़ा चौका दे। वास्तव में हम चाहते भी है कि आप चौकें, क्योंकि हम चाहते है कि आप सच्चाई को जाने। आप से झूठ बोलने से हमें कोई लाभ नहीं है। मार्टिन लूथर को जो शिक्षा गलत लगी उसको उसने छोड दिया और उसके जैसे लोग "Protestants" प्रोटेस्टैन्ट कहलाये - जिसका अर्थ प्रोटेस्ट या विरोध करने वाले है। वे उन गलत धर्म सिद्धांतो का विरोध कर रहे थे जो वो सोचते थे कि उनका चर्च उन्हें सिखा रहा है।

मार्टिन लूथर आत्मा कि अमरता पर विश्वास नहीं करता था। उसने ऐसा कहा, और अपनी पुस्तकों में भी ऐसा लिखा। लूथरवादी आज, इससे शर्मिन्दा है और इसका उदाहरण नहीं देना चाहते है, पर उसके लेखो में यह मिलता है। आप किसी पुस्तकालय में जाकर उसे देख सकते है। इसलिए या तो मार्टिन लूथर सही था और लूथरवादी लोग आज गलत है, या मार्टिन लूथर गलत था और लूथरवादी आज सही है!

इसलिए अब आप कैसे जानेगें कि क्या सही है? जहां भी आप चर्च में जाते है उन्हें ध्यान से देखे और अधिक से अधिक चर्चो में जाये। आप क्या करने जा रहे है? आप सही चर्च को कैसे चुनेंगे? क्या आप ऐसे चर्च को चुनेंगे जिसकी बड़ी सुन्दर ईमारत हो या जिसका एक नाटकिय प्रचारक हो, या फिर वह जिसका सबसे अच्छा संगीत और (गायक मंडली) हो? या तो वो जो सबसे नजदीक हो? इसी प्रकार बहुत से लोग चर्च का चुनाव करते हैं।

बाईबिल पर आधारित विश्वास

Bible based beliefs

क्या अपने कभी बाईबिल को ध्यानपूर्वक पढ़ने के बारे में सोचा है? यह परमेश्वर की पुस्तक है। उसी ने इसे लिखा है। क्या उसने केवल अपना समय व्यतीत करने के लिए इसे लिखा है, क्योंकि उसके पास कोई और काम नहीं था? यदि परमेश्वर हमारे लिये इस पुस्तक को लिखकर हमारे बारे में इतना सोचता है तो हमें भी इस पुस्तक को पढ़ने के विषय में सोचना चाहिये।

अब मैं आपको थोडा सा किस्टेडेलफियन के विषय में बताना चाहता हूँ। हो सकता है आप हमसे परिचित न हो। जब परमेश्वर की पुस्तक को पढने की बात आती है तो किस्टेडेलफियन, एक समुदाय, के पास एक अलग तरीका है। हर एक किस्टेडेलफियन का उद्देश्य वर्ष भर बाईबिल को पढते रहना होता है। हमारे पास एक छोटा सा चार्ट है जो बाईबिल कम्पेनियन (a Bible companion) कहलाता है। एक दिन में बीस मिनट का समय लगता है। यदि आप दिन भर में से परमेश्वर के लिए बीस मिनट का समय भी नहीं निकाल सकते तो परमेश्वर आपके लिए कोई महत्व नहीं रखता है। यदि आप बाईबिल को स्वंय पढ़ेगे तो आप जान पायेंगे कि वह क्या कहती है। कई लोग बाईबिल को यहाँ से वहाँ से छोटे छोटे टुकड़ो में पढ़ लेते है या वो ये भी नहीं जानते कि वो क्या पढ़ रहे है। आपको पूरी बाईबिल हर वर्ष भर में पढ़ना चाहिए।

मैं अभी 60 वर्ष का हूँ और मैंने पूरी बाईबिल पढ़ी है और मैं नहीं जानता कि मैंने उसे कितनी बार पढ़ी है। मैं ऐसा तब से करता आ रहा हूँ जब मैं बच्चा था। मेरे माता-पिता ने मुझे बाईबिल से प्यार करना सिखाया और मैं उनका आभारी हूँ क्योंकि बाईबिल वह है जो परमेश्वर ने कहा। वह नहीं जो किसी मनुष्य ने कहा - बल्कि जो परमेश्वर ने कहा। हम किस्टेडेलफियन जो कुछ भी आपको बाईबिल के बारे में बताते हैं, उसे आपको भी बाईबिल के द्वारा जाँचना चाहिए। यदि हम आपसे ऐसा कुछ कहे जो इस पुस्तक (बाईबिल) में नहीं, तो हम गलत है।

जो बाईबिल कहती है हमें उसके आधार पर चलना चाहिए। बाईबिल कहती है कि आप सदा जीवित रह सकते है, पर आप जीवित नहीं रह सकते जब आप मृत है, बाईबिल कहती है कि धर्मियों कि आशा पुर्नरुत्थान है कि यीशु उन सोये संतों को जगाने के लिए इस पृथ्वी पर लौटेगा जो मृत्यु में अचेतन है और उसके आने की बाट जोह रहे है।

और सब विश्वासियों को उस एक ही दिन एकसा ही पुरुस्कार प्राप्त होगा।

विश्वासियों की आशा

The hope of the faithful

परमेश्वर ने इब्राहीम से लगभग चार हजार वर्ष पहले ये वायदा किया और क्या आपको मालूम है कि आपको भी वही मिलेगा जो उसी दिन इब्राहीम को मिलेगा। वह आपसे क्षणभर पहले न पायेगा क्योंकि "ये सब विश्वास में मरे जिन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तु न पाई परमेश्वर ने हमारे लिये पहिले से एक उत्तम बात ठहराई कि वे हमारे बिना सिद्धता को न पहुँचे।" (इब्रानियों 11:40) अतः इब्राहीम स्वर्ग नहीं गया। दाऊद भी स्वर्ग नहीं गया (देखें प्रेरितों 2:34) वे पुर्नरुत्थान का इंतजार कर रहे है। स्वर्ग जाना बाईबिल की शिक्षा नहीं, यह सच्ची मसीह शिक्षा नहीं है, यह मिस्रीयों का विश्वास है जिसमें यूनानी दर्शनशास्त्र का मिश्रण है। यह मसीह लोगों में, यीशु के बाद की प्रारम्भिक शताब्दियों में, आ गया।

क्या आपने पदों को कभी विभाजित कर के देखा है? नये नियम के सबसे लोकप्रिय पद को देखें - क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई भी उस पर विश्वास करे नाश न हो पर अनंत जीवन पाये।" (युहन्ना 3:16)

इस पद में दो समूह है। एक समूह जो नाश होता है दूसरा जिनका अन्नत जीवन होता है। ऐसा नही है कि उन सबको अनन्त जीवन मिलेगा, कुछ को ऊपर और कुछ को नीचे! एक समूह को अनन्त जीवन मिलेगा और दूसरा समूह नष्ट होगा। यदि आप यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करते तो वह पद कहता है आपका नाश होगा। हो सकता है आप उसे पढना न चाहेंगे। पुराने नियम में इस्राएल की सन्तानों के समय, उन्होंने यशायाह नबी से कहा "झूठ बोलो, सच नहीं", और ऐसी बात बोलो जो हम लोगो को अच्छी लगे। हाँ आज आप अधिक लोगों को चर्च में इकटठा कर सकते है, यदि आप उनसे झूठ बोले, बाईबिल आप से झूठ नहीं बोल सकती। हमारी आपसे गुजारिश है कि आप जो कुछ भी बाईबिल में पढ़े या सुने उसकी जाँच करें।

"लगभग" मसीही

'Almost' a Christian

पौलुस ने बाईबिल पर भाषण दिया। वह वास्तव में परीक्षा से गुजर रहा था। वह एक बड़े महत्वपूर्ण राजा के बारे में बोल रहा था, और जैसे ही वह उन चीजों के बारे में बातें कर रहा था, जिसके बारे में आप पढ़ रहे है, प्रेरित पौलुस ने राजा की आँखो में देखकर कहा -

“राजा अग्रिप्पा क्या आप भविष्य वक्ताओ का विश्वास करते है।" क्या आप बाईबिल का विश्वास करते है, क्या आप परमेश्वर जो कहता उस पर विश्वास करते है? क्या आप जानते है कि अग्रिप्पा राजा ने क्या कहा? मै आशा करता हूँ आप वह नहीं कहेंगे जैसा उसने कहा - उसने कहा "तू थोड़े ही समझाने से मुझे मसीही बनाना चाहता है।" (प्रेरितों 26:28)

यदि हम आपको लगभग मसीह बनने के लिए प्रेरित करे तो हम असफल हुए है, क्योंकि लगभग पर्याप्त नहीं है। या तो आप सम्पूर्ण मसीह हो जायेगें या फिर मसीह नही होगें।

आप लगभग मसीह नहीं रह सकते दुर्भाग्यवश राजा अग्रिप्पा का नाश हुआ। पौलुस नहीं चाहता था कि वह नाश हो। हम नहीं चाहते कि आप नाश हों। हम आपके अभारी है कि आप ने इस पुस्तक को पढने का समय निकाला। आपके समय के लिए धन्यवाद। पर हम इसे यही खत्म नहीं करना चाहते। यदि आप इस पुस्तक को पढते है और पढने के बाद अलग रख देते है तथा वो जो कुछ आपने पढा उसे भूल जाते है तो संभवत: हमने आपका समय बर्बाद किया है।

यदि आप ये कहें कि, "आपने मुझे बाईबिल आधारित मसीह बनने के लिए "लगभग प्रेरित किया", तो हमने आपको असफल किया है। आपको इसे सम्पूर्ण रीति से अपनाना पडेगा, तभी आप ऐसे खुश रह सकते है जैसे आप कभी नहीं रहे। जब तक आप अपने जीवन को यीशु मसीह की ओर मोड न ले तब तक आपको नहीं मालूम होगा कि खुशी क्या है। वर्तमान समय में यह विश्व में सबसे महानतम जीवन है। इसके अलावा आपके पास परमेश्वर के राज्य में आने वाले अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा भी है।लेकिन आपको विश्वास करना होगा और विश्वास करने से पहले जानना होगां। हम आपकी जानने में मदद करना चाहते है। पर आपने केवल लगभग कहा है आपने पर्याप्त नहीं कहा - यीशु ने कहा - “सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुँचाता है और बहुतेरे है जो उस से प्रवेश करते है।" (मत्ती 7:13)

आप जानते है एक अवरूद्ध यातायात मृत्यु की ओर जा रहा है। सारे लोग जो अपने

जीवन में अपना मार्ग चुन कर जीवन के मुक्त रास्तों कि ओर जा रहे है, वह मृत्यु की ओर जा रहे है। वे आनंद की खोज में है पर ईश्वर के आनन्द का मार्ग थोडा संकरा है। उसमें भीड़ भाड़ नहीं है क्योंकि - "क्योंकि संकेत है वह फाटक और सकंरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुँचाता है, और थोड़े है जो उसे पाते हैं।" (पद 14)

ऐसा नहीं कि परमेश्वर नहीं चाहता कि सब बचा लिये जाये। वह चाहता है। वह आपको बचाना चाहता है, आपका उद्धार करना चाहता है, लेकिन उद्धार के लिए वह आप पर दबाव नही दे रहा है। परमेश्वर हमे झपटकर हमारे पैर पकड़कर और घसीटते - मारते हुए चिल्लाते हुए अपने राज्य में नही ले जायेगा। यदि आप सदा के लिए नहीं जीना चाहते तो आपकी इच्छा है। यह मूर्खतापूर्ण निर्णय है पर अधिकाँश लोग यह निर्णय लेते है। अधिकाँश लोग ईश्वर को नीचा कर देते है।

हम आशा करते है कि उन पाठकों में से जो इस पुस्तक को पढ़ रहे है उनमें से कुछ ईमानदार और अच्छे दिल वाले कहेंगे "मुझे इस विषय में और बताओ" हम आप से इस वक्त समर्पण का निर्णय लेने के लिए नहीं कहते है। हम अभी आपको वेदी पर नहीं बुलाते क्योंकि हम विश्वास करते है कि सच्चा धर्म मस्तिष्क में ज्ञांन और दिल में इच्छा का समिश्रण है, दोनों कि आवश्यकता है, कुछ चर्च केवल मस्तिष्क से जाते है और कुछ दिल से जाते है। यीशु मसीह में आने के लिए आपके दिल और मस्तिष्क दोनों कि आवश्यकता है। तभी आप वास्तव में अब और सदा के लिए जीवित रह सकते है।

अतः जो चुनौती मूसा ने अपने समय में दी हम उसे आपको देते हैं - "आज मैंने तुझ को जीवन और मरण, लाभ-हानि दिखाया है" (व्यवस्थाविवरण 30:15)

यही हमने इस छोटी सी पुस्तक में किया - हमने आपके सामने जीवन और अच्छाईया रखी, मृत्यु और बुराई रखी है। पर मूसा (पद 16 और 19 में कहता है)

"मैं आज तुझे आज्ञा देता हूँ कि अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करना और उसके मार्ग पर चलना, और उसकी आज्ञाओं विधियों और नियमों को मानना जिस से तू जीवित रहे और बढ़ता जाऐ, और तेरा परमेश्वर यहोवा उस देश में जिसका अधिकारी होने को तू जा रहा है, तुझे आशीष दें।"

"मैं आज आकाश और पृथ्वी दोनों को तुम्हारे सामने इस बात का साक्षी बनाता हूँ कि मैंने जीवन और मरण, आशीष और श्राप को तुम्हारे आगे रखा है, इसलिए तू **जीवन ही को अपना ले**, कि तू और तेरा वंश दोनों जीवित रहे।"

अधिक जानकारी अथवा मुफ्त में बाईस पाठो के पाठ्यक्रम को प्राप्त करने के विषय में कृपया निम्न पते पर लिखे।

क्रिस्टेडेलफियन
पो. ओ. बाक्स. - 10
मुजफ्फरनगर, 251002, उत्तर प्रदेश

The Christadelphians
P.O. Box 10,
Muzaffarnagar 251002, U.P.